

पुणे से 48 लोगों का समूह पहुंचा था दिवेआगर, हादसे के बाद सीपीआर देकर बचाने का भी किया गया प्रयास

पिकनिक पर गए आठ छात्रों की डूबने से मौत



नईदुनिया ब्यूरो, रायगढ़ : महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में दिवेआगर बीच पर गुरुवार को पिकनिक मनाने पहुंचे आठ छात्रों की समुद्र में डूबने से मौत हो गई। सभी छात्रों के शव बरामद कर लिए गए हैं। पुलिस के अनुसार, पुणे से 48 लोगों का एक समूह पिकनिक के लिए दिवेआगर आया था। इनमें 11वीं और 12वीं कक्षा के छात्र भी शामिल थे। समूह में शामिल आठ छात्र समुद्र के पानी में उतर गए। पानी की गहराई और बहाव का अंदाजा नहीं लग पाने के कारण वे गहरे



पानी में चले गए और डूब गए। मृतकों में सभी छात्र लड़के हैं। हादसे की सूचना मिलने के बाद बचाव दल मौके पर पहुंचा और छात्रों को पानी से बाहर निकाला।

स्थानीय लोगों और पुलिस ने पानी से बाहर निकाले गए छात्रों को सीपीआर देकर उनकी जान बचाने का प्रयास किया। सभी आठ छात्रों को नजदीकी

अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस के मुताबिक, पिकनिक पर आया यह समूह पुणे के आलंदी इलाके की एक निजी



जिम्बाब्वे में हेलिकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त, छह की मौत

► मरोनडेता में हेलिकॉप्टर कैश के बाद लगी आग, राष्ट्रपति के करीबी कारोबारी की भी मौत

हरारे, पंजेंसी : जिम्बाब्वे के मरोनडेरा इलाके में बुधवार शाम एक हेलिकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में हेलिकॉप्टर में सवार सभी छह लोगों की मौत हो गई। दुर्घटना के बाद हेलिकॉप्टर में आग लग गई। मृतकों में जिम्बाब्वे के चर्चित कारोबारी विकनेल चिवायो और उनकी पत्नी लूसी मुतेके भी शामिल हैं। 43 वर्षीय चिवायो को राष्ट्रपति एमर्सन मनांगगवा का करीबी माना जाता था। हादसे में मारे गए अन्य चार लोगों की पहचान सामने नहीं आई है। हेलिकॉप्टर राजधानी हरारे से करीब 70 किलोमीटर दूर मरोनडेरा के ग्रामीण इलाके में गिरा। दुर्घटना किस वजह से हुई, इसकी जानकारी सामने नहीं आई है। पुलिस और संबंधित अधिकारी हादसे की जांच कर रहे।

विकनेल चिवायो जिम्बाब्वे के चर्चित कारोबारियों में शामिल थे। वह इंदोटेक जिम्बाब्वे के संस्थापक थे। यह कंपनी ऊर्जा और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं से जुड़े

काम करती है। चिवायो कई बड़े नेताओं से मुलाकात को लेकर भी चर्चा में रहे थे। वह दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा, केन्या के राष्ट्रपति विलियम रुटो, तंजानिया की राष्ट्रपति साभिया सुलुहु हसन और इस्वातिनी के राजा मस्वाती तृतीय से मिल चुके थे। उनकी कंपनी को जिम्बाब्वे में कई सरकारी परियोजनाओं के ठेके मिले थे। इनमें करीब 100 मेगावाट क्षमता वाली ग्वांडा सोलर परियोजना भी शामिल थी। इस परियोजना में काम में देरी और अनुबंध से जुड़े विवाद हुए थे तथा मामला अदालत तक पहुंचा था। चिवायो के कारोबार और सरकारी ठेकों को लेकर समय-समय पर सवाल भी उठे, हालांकि उन्होंने अपने खिलाफ लगाए गए आरोपों से इनकार किया था। चिवायो सोशल मीडिया पर अपनी आलोचान जीवनशैली की तस्वीरें साझा करते थे। वह महंगी कारों, निजी विमान और हेलिकॉप्टरों के साथ तस्वीरें पोस्ट करते थे। पत्नी लूसी के साथ यात्राओं की तस्वीरें भी साझा करते थे। कई मौकों पर मशहूर हस्तियों, धार्मिक नेताओं और अन्य लोगों को महंगी गाड़ियों और नकद उपहार देने को लेकर भी वह चर्चा में रहे थे।

टीवी शो से मिली सीख ने बचाई 174 जिंदगियाँ

कनाडाई डॉक्यूमेंट्री सीरीज ‘मे-डे’ से जुड़ी जानकारी काम आई, फ्लाईडुबई विमान में सामने आई थी आपात स्थिति

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली: फ्लाईडुबई की एक उड़ान में आई आपात स्थिति के बाद कनाडाई डॉक्यूमेंट्री सीरीज ‘मे-डे’ की चर्चा शुरू हो गई है। विमान में पायलट पर हमला किए जाने के बाद ऐसी स्थिति बनी, जिससे उड़ान में सवार यात्रियों की सुरक्षा पर संकट खड़ा हो गया। इस दौरान एक यात्री ने टेलीविजन पर देखी गई जानकारी को याद कर सूझबूझ दिखाई और स्थिति को संभालने में मदद की। इस घटना के बाद विमान में सवार 174 लोगों की जान बचने की बात सामने आई है। विमान में हुई घटना के दौरान यात्री को डॉक्यूमेंट्री सीरीज ‘मे-डे’ में दिखाए गए विमान हादसों और आपात परिस्थितियों से जुड़ी जानकारी याद आई। इसी जानकारी का इस्तेमाल करते हुए उसने संकट के समय जरूरी कदम उठाने में मदद की। फ्लाईडुबई की इस उड़ान से जुड़ी घटना में भारतीय पायलट स्मित मच्छर भी चर्चा में आए हैं। विमान में बड़ी संख्या में इजराइली यात्री सवार थे। उड़ान के दौरान सामने आई स्थिति के बाद यात्रियों में चिंता का माहौल बना, लेकिन समय रहते स्थिति को संभाल लिया गया। घटना ने विमान यात्रा के दौरान आपात परिस्थितियों से निपटने में यात्रियों की जागरूकता और सूझबूझ की भूमिका को भी सामने रखा। कनाडाई डॉक्यूमेंट्री



सीरीज ‘मे-डे’ में वास्तविक विमान दुर्घटनाओं और उनसे जुड़े मामलों को प्रस्तुत किया जाता है। विमान में सवार यात्री ने इसी कार्यक्रम से पहले देखी गई जानकारी को याद कर उसका इस्तेमाल किया। फ्लाईडुबई की उड़ान से जुड़ी इस घटना में पायलट पर हमले के बाद पैदा हुए संकट को टालने में यात्री की भूमिका सामने आई। घटना के बाद 174 यात्रियों के सुरक्षित बचने की जानकारी चर्चा में है।

हर्डिजैक का खतरा होता तो विमान गिराने की तैयारी में था इजराइल

तेल अवीव: दुबई से तेल अवीव जा रहे फ्लाईडुबई के विमान में कॉकपिट के अंदर हुए हमले के बाद इजराइल ने गंभीर स्थिति के लिए लड़ाकू विमान रवाना किए थे। विमान में 174 यात्री सवार थे। इजराइली अधिकारियों के अनुसार, अगर विमान नियंत्रण वापस नहीं मिलता और उसे इजराइल में हमला करने का खतरा पैदा होता, तो उसे हवा में रोकने के विकल्प पर विचार किया जा सकता था। भारत में इजराइल के राजदूत रियूयेन अजार ने कहा कि ऐसी स्थिति में प्रधानमंत्री बेजामिन नेतन्याहू को कार्रवाई पर फेरसला लेना पड़ सकता था। इजराइल ने विमान में यात्रियों को बंधक बनाए जाने की स्थिति के लिए भी तैयारी की थी। राष्ट्रीय आतंकवाद-रोधी इकाई यामाम को संभावित बातचीत और बंधकों को सुरक्षित निकालने के लिए तैयार रखा गया था। विमान के जॉर्डन या सऊदी अरब में दुर्घटनाग्रस्त होने की स्थिति में विशेष कमांडो इकाई शालदमा को भेजने की योजना भी थी। घटना के दौरान भारतीय केप्टन स्मित माछर पर सह-पायलट ने हमला किया। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद माछर ने कॉकपिट का दरवाजा खोल दिया, जिसके बाद यात्रियों और चालक दल ने हमलावर को काबू किया। विमान तेजी से करीब 14 हजार फीट नीचे आया, लेकिन बाद में नियंत्रण हासिल कर उसे सऊदी अरब के तबुक में सुरक्षित उतारा गया। माछर का उपचार चल रहा है और उनकी हालत स्थिर बताई गई है। घटना की जांच जारी है।

यासीन को पाक व आतंकी संगठनों से फंडिंग

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली: नई दिल्ली की विशेष एनआईए अदालत ने यासीन मलिक समेत सात आरोपियों के खिलाफ धनशोधन निवारण अधिनियम के तहत आरोप तय करने का आदेश दिया है। अदालत ने कहा कि आरोपियों के खिलाफ पर्याप्त साक्ष्य मौजूद हैं, जिससे उनके खिलाफ मजबूत संदेह उत्पन्न होता है। प्रवर्तन निदेशालय का आरोप है कि आरोपियों ने पाकिस्तान और अन्य आतंकी संगठनों से हवाला तथा अन्य माध्यमों से 8.94 करोड़ रुपये हासिल किए और

यह धन आरोपियों तक पहुंचाया गया। मामले में यासीन मलिक के अलावा जहूर अहमद शाह बटाली, अब्दुल राशिद शेख, शबीर अहमद शाह, नवल किशोर कपूर, ट्रिशन फार्मर्स एंड कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड और मसरत आलम भट आरोपी हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने अपराध से अर्जित धन की जांच के लिए 14 जून 2017 को शिकायत दर्ज की थी। यासीन मलिक को मई 2022 में आतंकी फंडिंग मामले में दिल्ली की एनआईए अदालत ने उम्रकैद की सजा सुनाई थी।

मुद्दा

देशभर में एनआरसी लागू करने आरएसएस ने उठाई मांग, मतदाता सूची की जांच पर जोर...

कौन भारतीय नागरिक है और कौन नहीं, इसकी पहचान जरूरी

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली: स्पेशल इंटेेंसिव रिवीजन (एसआईआर) और जनगणना को लेकर जारी चर्चा के बीच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने देशभर में नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजन्स (एनआरसी) लागू करने की मांग दोहराई है। दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में संघ के प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने कहा कि यह स्पष्ट होना जरूरी है कि कौन भारतीय नागरिक है और कौन नहीं। उन्होंने मतदाता सूची में गलत तरीके से शामिल गैर-नागरिकों की पहचान करने की जरूरत बताई। आंबेकर ने नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) के तहत पात्र लोगों को

नागरिकता देने और उनकी पहचान एनआरसी के माध्यम से किए जाने की बात कही। उन्होंने जनसंख्या में बदलाव को 1947 के विभाजन से जोड़ते हुए कहा कि जनसंख्या संतुलन देश की सांस्कृतिक पहचान, एकता और सुरक्षा से जुड़ा विषय है। उन्होंने राजनीतिक दलों से संवेदनशील राष्ट्रीय मुद्दों का राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल नहीं करने की अपील की और कहा कि इन विषयों को केवल धर्मनिरपेक्ष बनाम सांप्रदायिक बहस के बजाय देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा के नजरिए से देखा जाना चाहिए। आंबेकर ने कहा कि एनआरसी

लोगों के उत्पीड़न का भी उल्लेख किया। उन्होंने भारत में जनसंख्या बदलाव की शुरूआत मुस्लिम आक्रमणों के दौर से जोड़ते हुए 1947 के विभाजन का हवाला दिया। आंबेकर ने कानूनों में समानता की बात करते हुए विवाह, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के

एनआरसी को लेकर देशभर में विरोध प्रदर्शन हुए थे। दिसंबर 2019 में प्रधानमंत्री ने कहा था कि सरकार ने सत्ता में आने के बाद एनआरसी पर कोई चर्चा नहीं की है। 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के घोषणापत्र में भी एनआरसी शामिल नहीं था। जनगणना की प्रक्रिया के बीच एनआरसी का मुद्दा फिर चर्चा में आया है। मौजूदा जनगणना फॉर्म में नागरिकता, माता-पिता की जानकारी, आधार और मतदाता पहचान पत्र से जुड़े सवाल शामिल हैं, जो 2020 के नेशनल पॉपुलेशन रजिस्टर (एनपीआर) के फॉर्म में भी थे।

देश में 13वां सबसे सूखा मानसून सामान्य से 12.6% कम बारिश



नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली: मानसून-2026 सामान्य से 12.6 प्रतिशत कम बारिश के साथ समाप्त हुआ और यह देश का 13वां सबसे सूखा मानसून रहा। पिछले 11 वर्षों में भी यह सबसे कम बारिश वाला मानसून रहा है। सीजन के अंतिम सप्ताह में सामान्य से 50 प्रतिशत अधिक बारिश हुई, जिससे बारिश की कमी में 2.5 प्रतिशत का सुधार हुआ। देश के 43 प्रतिशत जिलों में 20 से 72 प्रतिशत तक कम बारिश दर्ज की गई। पंजाब में सामान्य से 41 प्रतिशत और राजस्थान में करीब 22 प्रतिशत कम बारिश हुई। इसके अलावा नौ राज्यों में भी औसत से कम बारिश दर्ज की गई।

पूर्वी भारत में ओडिशा में सामान्य से 30 प्रतिशत अधिक बारिश हुई, जबकि पूर्वोत्तर राज्यों में 1901 के बाद सबसे कम बारिश दर्ज की गई। मेघालय में भी सामान्य से 60 प्रतिशत कम बारिश हुई। मानसून की विदाई 19 सितंबर से शुरू हो चुकी है। अगले दो दिनों में राजस्थान और उत्तर प्रदेश के शेष हिस्सों के अलावा जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, गुजरात और मध्य प्रदेश के ज्यादातर हिस्सों से मानसून लौटने की संभावना है। बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों से भी इसकी वापसी होगी।

दो घातक इंजेक्शन के बाद भी जिंदा रही महिला कैदी, मौत की सजा टली

► अमेरिका में मौत के इंजेक्शन से सजा देने का प्रयास नाकाम, धड़कन चलती रही और खरटे लेती रही कैदी



टेनेसी, एजेंसी: अमेरिका के टेनेसी राज्य में मौत की सजा पाने वाली क्रिस्टा गेल पाइक को बुधवार को घातक इंजेक्शन की दो खुराक दिए जाने के बाद भी मौत नहीं हुई। अधिकारियों के अनुसार, पाइक को पेंटोबार्बिटल की दो खुराक दी गई, लेकिन इसके बाद भी उसकी धड़कन चलती रही। वह काफी देर तक खरटे लेती हुई सुनि गई। बाद में उसे एंथेल्सेंस से चिकित्सा केंद्र ले जाया गया। इस घटना के बाद मौत की सजा की प्रक्रिया रोक दी गई। प्रक्रिया के दौरान शाम 7:27 बजे पाइक स्ट्रेचर पर बंधी हुई थी और उसे पहली खुराक दी गई। रात 8:26 बजे पेंटोबार्बिटल की दूसरी खुराक दी गई। रात 8:53 बजे माइक्रोफोन बंद

कर गवाहों को बाहर जाने के लिए कहा गया। इसके बाद पाइक के बकीलों ने प्रक्रिया रोकने के लिए तत्काल कानूनी कदम उठाए। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, घातक इंजेक्शन दिए जाने के बाद भी किसी व्यक्ति के जिंदा रहने का यह मामला पहले के उन मामलों से अलग है, जिनमें नस तक दवा पहुंचाने में समस्या के कारण प्रक्रिया विफल हुई थी।

